

मोड्यूल 16 : नवजात शिशु की देखभाल में अंतिम कदम

सत्र 2 : जन्मतेही शिशु का दम घुटना तथा सेप्सिस के उपचार के लिए आशाओं का अंतिम मूल्यांकन

दिवस : 1
समयावधि : 3 घं.

प्रयोजन

दम घुटे शिशु की तथा सेप्सिस वाले शिशु की देखभाल करने में आशा की योग्यता का आंकलन करना। इसमें निदान, उपचार, माता पिता को परामर्श देना तथा उपयुक्त फॉर्म भरना शामिल है। इस मूल्यांकन को तटस्थ परिक्षक द्वारा करवाना, जिससे मूल्यांकन के पश्चात् सफल आशाओं को बैग और मास्क तथा जेन्टामासिन की सुई का प्रयोग करने के लिए प्रमाणित किया जा सके।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यता आएगी –

1. दम घुटे शिशुजन्म का तथा सेप्सिस का निदान तथा उपचार मार्गदर्शक तथ्यों के अनुसार करना (लिखित परीक्षा में 50 प्रतिशत या अधिक तथा प्रात्यक्षिक परीक्षा में 60 प्रतिशत या अधिक अंक प्राप्त करना)।

सामग्री

- अभ्यासपत्र 1: लिखित परीक्षा का प्रश्नपत्र
- प्रशिक्षक प्रपत्र 1: लिखित परीक्षा प्रश्नपत्र के उत्तर
- प्रत्येक आशा का गाँव में काम तथा प्रशिक्षण में प्रगती का रिकार्ड जिसमें दम घुटे शिशु का उपचार वाली जाँच सूचियाँ (दम घुटे शिशु के उपचार में शुरूआती कदम, चूषण पम्प का प्रयोग तथा बैग और मास्क का प्रयोग) तथा जेन्टामासिन सुई वाली जाँच-सूची दी है। इसी में प्रत्येक आशा के प्रात्यक्षिक को रिकार्ड करना है।
- चूषण पम्प तथा बैग और मास्क
- शिशु को पोछने तथा लपेटने के लिए कपडा, शिशु के कंधे के नीचे रखने के लिए तह किया हुआ कपडा
- जेन्टामासिन की सुई तथा दवाई की शीशी
- गुडियाएँ/ बैगन – सुई लगाने के लिए
- स्पिरिट, रूई, साबुन, पानी तथा प्रयोग की हुई सुईयों रखने के लिए प्लास्टिक डिब्बा
- संगणक के साथ वेब कैमेरा या विडिओ कैमेरा
- प्रशिक्षक प्रपत्र 2 : अंकतालिका

तैयारी

- अभ्यासपत्र 1 की प्रशिक्षणार्थियों की संख्या के अनुसार प्रतियाँ बनाएँ।
- जेन्टामासिन की शीशियाँ तथा सुईयाँ पर्याप्त संख्या में उपलब्ध कराएँ। इनका प्रयोग प्रात्यक्षिक परीक्षा में सुई लगाने के प्रात्यक्षिक के लिए होना है।
- ऊपर दी गयी सूची के अनुसार अन्य सामान तैयार रखें।

- प्रत्येक आशा का गाँव में काम तथा प्रशिक्षण में प्रगती का रिकार्ड साथ रखें जिसमें प्रत्येक आशा के प्रात्यक्षिक को रिकार्ड करना है।
- आशाएँ जब लिखित परीक्षा का प्रश्नपत्र लिख रही हो तब बाहरी परीक्षक उपस्थित हो।
- आशाओं के प्रात्यक्षिक का विडिओ या वेब कैमेरा से रिकार्डिंग कर लें। इसे बाहरी परीक्षक देखें और आशाओं की योग्यता का स्वतन्त्र मूल्यांकन करें।

प्रशिक्षण विधि

मूल्यांकन (45 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. अभ्यासपत्र 1: लिखित परीक्षा का प्रश्नपत्र बाँटें।
2. प्रत्येक आशा स्वयं इसे हल करे।
3. हल किये प्रश्नपत्र इकट्ठा कर लें।
4. हल किये प्रश्नपत्रों को बाहरी परीक्षक जाँचे। यदि बाहरी परीक्षक मूल्यांकन के समय उपस्थित हो तो प्रश्नपत्र तुरंत जाँच लें। प्रशिक्षक, आशाओं को प्राप्त अंकों की सूची प्रशिक्षक प्रपत्र 2 में बना लें।

प्रात्यक्षिक परीक्षा (2 घं.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. प्रत्येक आशा को दम घुटे शिशु के उपचार की पूरी प्रक्रिया का तथा जेन्टामाइसिन की सुई लगाने का प्रदर्शन करने को कहें।
2. एक समय एकही आशा प्रात्यक्षिक कर सकती है। इसलिए जिस आशा का प्रश्नपत्र हल करना समाप्त हो गया हो उसकी प्रात्यक्षिक परीक्षा शुरू कर सकते हैं।
3. सभी आशाओं के प्रात्यक्षिक का विडिओ कैमेरा या वेब कैमेरा से रिकार्डिंग कर लें।
4. सारे रिकार्डिंग को बाहरी परीक्षक देखें और आशाओं की योग्यता का मूल्यांकन करें और अंक दें।
5. प्रशिक्षक, आशाओं के प्रात्यक्षिक के हर कदम को जाँच सूचियों में लिख लें। सभी आशाओं का मूल्यांकन हो जाने पर प्रशिक्षक आशाओं की गलतियों के बारे में चर्चा करें तथा सुधार बताएँ।

सारांश

1. आशाओं के मूल्यांकन का नतीजा तैयार करें जिसमें सुपरवाइजर द्वारा गाँव में किया गया मूल्यांकन, लिखित परीक्षा के अंक और प्रात्यक्षिक परीक्षा के अंक समाविष्ट हो।
2. किसी आशा का परीक्षाफल सन्तोषजनक कहलाने के लिए उसे निम्न प्रकार से अंक प्राप्त होना आवश्यक है।
 - क. लिखित परीक्षा न्यूनतम अंक: 50 प्रतिशत
 - ख. प्रात्यक्षिक परीक्षा न्यूनतम अंक: 60 प्रतिशत
 - ग. गाँव में काम का सुपरवाइजर द्वारा मूल्यांकन श्रेणी: अ या ब
3. जिन आशाओं का परीक्षाफल सन्तोषजनक होगा उन्हीं आशाओं को शिशुओं पर बैग और मास्क तथा जेन्टामाइसिन की सुई का प्रयोग करने के लिए प्रमाणित किया जाएगा।
4. जिन आशाओं का परीक्षाफल सन्तोषजनक नहीं होगा उन आशाओं का पुनः प्रशिक्षण और भविष्य में मूल्यांकन किया जाएगा।
5. यदि संभव हो तो आशाओं का प्रमाणिकरण उनके गाँव में किया जाए। इससे, जान बचाने वाली उपयुक्त सेवाएँ आशाओं से लेने में गाँव के लोग आश्वस्त होंगे।